



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE



हिंदी विवि में भारतीय साहित्य में एकात्मता पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
भविष्य में इंटरनेट की सबसे बड़ी भाषा हिंदी होगी : प्रो. बालेंदु शर्मा

वर्धा, 09 जनवरी 2026 : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ एवं हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम सत्र में '21वीं सदी में तकनीक का विस्तार और हिंदी की उपस्थिति' विषयक सत्र में हिंदी एवं तकनीकी विशेषज्ञ प्रो. बालेंदु शर्मा दाधीचने कहा कि भविष्य में इंटरनेट की सबसे बड़ी भाषा हिंदी होगी। भारतीय इंटरनेट उपयोगकर्ता प्रतिदिन औसतन सात घंटे से अधिक समय ऑनलाइन बिताते हैं और लगभग 45 प्रतिशत लोग नियमित रूप से स्मार्टफोन एवं डिजिटल तकनीक का उपयोग करते हैं। इसके



बावजूद भारत में कंटेंट निर्माण की तुलना में उपभोग अधिक है। उन्होंने भारतीय मानक ब्यूरो की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि आज एमएस वर्ड, एप्पल जैसे प्रमुख प्लेटफॉर्म भारतीय भाषाओं को समर्थन दे रहे हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि 2022 में चैटजीपीटी के प्रारंभ के समय हिंदी पहले से ही उसमें शामिल थी।

गालिब सभागार में शुक्रवार को आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कोंकणी लेखक, विवि के आवासीय लेखक भूषण भावे ने की। सत्र में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की प्रो. पूनम कुमारी ने कहा कि 21वीं सदी में तकनीकी विस्तार ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। तकनीक को केवल अंग्रेजी तक सीमित मानने की धारणा को चीन, जापान और कोरिया जैसे देशों ने तोड़ा है। उन्होंने कहा कि अपनी भाषा में विज्ञान और तकनीक का अध्ययन करने से विद्यार्थियों की चिंतन क्षमता बढ़ती है तथा उच्च जीडीपी वाले देश प्रायः अपनी मातृभाषा में कार्य करते हैं।

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE



सी-डैक, पुणे के संयुक्त निदेशक डॉ. सुधीर कुमार मिश्र ने हिंदी भाषा एवं कम्प्यूटिंग में सॉफ्टवेयर के योगदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सी-डैक ने न केवल सुपर कंप्यूटरों की स्थापना की है, बल्कि उन्हें स्वदेशी रूप से डिजाइन और विकसित भी किया है। 'परम अरावत' इसका प्रमुख उदाहरण है। उन्होंने यूनिकोड, टाइपिंग टूल, प्रिंटिंग तकनीक और भाषा मानकीकरण में सी-डैक की भूमिका को रेखांकित किया।

अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. भूषण भावे ने कहा कि एआई, डिजिटल मीडिया तथा हिंदी भाषा के प्रति समाज में बढ़ती उदासीनता से जुड़े पाँच प्रश्न रखकर श्रोताओं के मत को समझने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि भाषाएँ भिन्न हो सकती हैं, किंतु मानवीय भावनाएँ एक ही होती हैं। सत्र का संचालन भाषा प्रौद्योगिकी एवं भाषा अभियांत्रिकी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. हर्षलता पेटकर ने किया तथा हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. कोमल कुमार परदेशी ने आभार ज्ञापित किया।

‘भारतीय साहित्य : अंतर्संबंध और वैशिष्ट्य’ विषय पर द्वितीय सत्र हिंदी एवं कश्मीरी लेखिका डॉ. क्षमा कौल की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें मुख्य मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात लेखक डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, कोलकाता उपस्थित रहे। सारस्वत अतिथियों में जेएनयू के प्रो. गिरीश नाथ झा, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के निदेशक डॉ. शैलेन्द्र मोहन, असमी लेखक प्रो. किरण हजारिका तथा लेखक प्रो. आर. एस. सराजु, हैदराबाद ने अपने उद्बोधन से भारतीय साहित्य के अंतर्संबंध पर व्यक्तव्य दिए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने शोध पत्रों का वाचन भी किया। सत्र का संचालन अनुवाद अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. मीरा निचळे ने किया तथा हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह ने आभार ज्ञापित किया। इस दौरान शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

संगोष्ठी का समानांतर सत्र ‘भारतीय साहित्य में एकात्मता के विविध पक्ष’ विषय पर महादेवी सभागार में हिंदी साहित्य विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुआ। सत्र का संचालन हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार सुमन ने किया। सत्र में पच्चीस शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों की प्रस्तुति दी।

हिंदी विश्वविद्यालयात भारतीय साहित्यातील एकात्मतेवर आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्र

भविष्यात इंटरनेटची सर्वात मोठी भाषा हिंदी असेल : प्रो. बालेंदु शर्मा

वर्धा, ९ जानेवारी २०२६ : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ आणि हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठीच्या पहिल्या सत्रात ‘२१ व्या शतकात तंत्रज्ञानाचा विस्तार आणि हिंदीची उपस्थिती’ या विषयावर बोलताना हिंदी व तांत्रिक तज्ज्ञ प्रो. बालेंदु शर्मा दाधीच म्हणाले की भविष्यात इंटरनेटवरील सर्वात मोठी भाषा हिंदी असेल. भारतीय इंटरनेट वापरकर्ते दररोज सरासरी सात तासांपेक्षा अधिक वेळ ऑनलाइन घालवतात आणि सुमारे ४५ टक्के लोक नियमितपणे स्मार्टफोन व डिजिटल तंत्रज्ञानाचा वापर करतात. तरीही भारतात कंटेंट निर्मितीपेक्षा कंटेंट उपभोग अधिक आहे. भारतीय मानक ब्युरोच्या भूमिकेचे कौतुक करताना त्यांनी सांगितले की एमएस वर्ड, ऑपल यांसारखे प्रमुख प्लॅटफॉर्म भारतीय भाषांना पाठबळ देत आहेत. तसेच २०२२ मध्ये चॅटजीपीटी सुरू झाले तेव्हा त्यात हिंदी भाषा आधीपासूनच समाविष्ट होती, याकडेही त्यांनी लक्ष वेधले.

गालिब सभागृहात सत्राच्या अध्यक्षस्थानी प्रसिद्ध कोंकणी लेखक व विद्यापीठाचे निवासी लेखक भूषण भावे होते. सत्रात जवाहरलाल नेहरू विद्यापीठाच्या प्रा. पूनम कुमारी यांनी सांगितले की २१ व्या शतकातील तांत्रिक विस्ताराने मानवी जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रावर परिणाम केला आहे. तंत्रज्ञान फक्त इंग्रजीपुरते मर्यादित आहे ही धारणा चीन, जपान आणि कोरिया यांसारख्या देशांनी मोडून काढली आहे. मातृभाषेत विज्ञान व तंत्रज्ञानाचे शिक्षण घेतल्यास विद्यार्थ्यांची विचारशक्ती वाढते आणि उच्च जीडीपी असलेले देश प्रामुख्याने आपल्या मातृभाषेतूनच कार्य करतात, असेही त्यांनी नमूद केले.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE



सी-डॉक, पुणेचे संयुक्त संचालक डॉ. सुधीर कुमार मिश्र यांनी हिंदी भाषा व संगणन क्षेत्रातील सीडॉकच्या योगदानावर प्रकाश टाकला. सी-डॉकने केवळ सुपरकॉम्प्युटरची स्थापना केली नाही, तर त्यांची स्वदेशी रचना व विकासही केला आहे. 'परम अरावत' हे त्याचे प्रमुख उदाहरण आहे. युनिकोड, टायपिंग साधने, मुद्रण तंत्रज्ञान आणि भाषा मानकीकरणातील सीडॉकच्या भूमिकेवरही त्यांनी भर दिला.

अध्यक्षीय भाषणात डॉ. भूषण भावे यांनी एआय, डिजिटल माध्यमे आणि हिंदी भाषेबाबत समाजात वाढत असलेल्या उदासीनतेची संबंधित पाच प्रश्न उपस्थित करून श्रोत्यांची मते जाणून घेण्याचा प्रयत्न केला. भाषा वेगवेगळ्या असू शकतात मात्र मानवी भावना एकसारख्या असतात, असे ते म्हणाले. सत्राचे संचालन भाषा प्रौद्योगिकी व भाषा अभियांत्रिकी विभागाच्या सहाय्यक प्राध्यापिका डॉ. हर्षलता पेटकर यांनी केले, तर हिंदी साहित्य विभागाचे सहाय्यक प्रोफेसर डॉ. कोमल कुमार परदेशी यांनी आभार मानले.

‘भारतीय साहित्य : अंतर्संबंध आणि वैशिष्ट्य’ या विषयावरील दुसरे सत्र हिंदी व काश्मिरी लेखिका डॉ. क्षमा कौल यांच्या अध्यक्षतेखाली पार पडले. या सत्रात मुख्य अतिथी म्हणून कोलकात्याचे सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी उपस्थित होते. सारस्वत अतिथींमध्ये जेएनयूचे प्रा. गिरीश नाथ झा, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, म्हैसूरचे संचालक डॉ. शैलेन्द्र मोहन, आसामी लेखक प्रा. किरण हजारिका तसेच हैदराबादचे लेखक प्रा. आर. एस. सराजु यांनी आपल्या भाषणांतून भारतीय साहित्यातील अंतर्संबंधांचे विचार मांडले.

या वेळी विश्वविद्यालयातील शिक्षक व शोधार्थ्यांनी संशोधन निबंधांचे वाचन केले. सत्राचे संचालन अनुवाद अध्ययन विभागाच्या सहाय्यक प्राध्यापिका डॉ. मीरा निचळे यांनी केले, तर हिंदी साहित्य विभागाचे सहाय्यक प्राध्यापक डॉ. रूपेश कुमार सिंह यांनी आभार व्यक्त केले. या वेळी शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

या परिसंवादाचे समांतर सत्र ‘भारतीय साहित्यात एकात्मतेच्या विविध बाजू’ विषयावर महादेवी सभागृहात आयोजित करण्यात आले. या सत्राचे अध्यक्ष हिंदी साहित्य विभागाचे असोसिएट प्रोफेसर डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी होते. संचालन हिंदी साहित्य विभागाचे सहाय्यक प्राध्यापक डॉ. सुनील कुमार सुमन यांनी केले. या सत्रात पंचवीस शोधार्थ्यांनी शोधनिबंध सादर केले.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305